eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

उपभोक्तावादी मानसिकता और पीपल वृक्ष

निरूपमा सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्ना0 महा0, माधवपुरम, मेरठ

Received: 08 November 2025, Accepted: 20 November 2025, Published online: 30 November 2025

Abstract

यह शोध पत्र भारत में लगातार प्रसारित हो रही उपभोक्तावादी मानसिकता के प्रभाव को पीपल वृक्ष के सम्बन्ध में अनुभवात्मक अवलोकन के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक प्रयत्न है। भारतीय संस्कृति में पीपल वृक्ष का महत्व तथा इसके पर्यावरणीय महत्व की चर्चा करते हुए 21वी सदी के भारतीय समाज में आवासीय कॉलोनी, मौहल्लो इत्यादि स्थनों में स्थिति पीपल वृक्ष की स्थिति तथा जन सामान्य द्वारा किए जाने वाले व्यवहार को इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख शब्द – पीपल वृक्ष, उपभोक्तावादी, संस्कृति, पर्यावरण, भारतीय समाज

Introduction

भारत देश की संस्कृति बहुत प्राचीन संस्कृति मानी जाती है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण व संवर्धन करने हेतु मानवीय समाज के नियमों व व्यवहारों का निर्माण कर इनके अनुसार ही परस्पर व्यवहार किए जाते थे। जैसे–जल स्रोत्रो को गन्दा न करना, हरे वृक्षों को न काटना, अपने आवासीय स्थल के अन्दर और बाहर उचित पेड़–पौड़े लगाना इत्यादि। भारतीय संस्कृति में पीपल वृक्ष को विशेष महत्त्व का माना गया है। विश्व की कुछ प्राचीन सभ्यताओं में से भारत की सिंधु घाटी सभ्यता भी है, जिससे प्राप्त मोहरो व अन्य सामग्री पर पीपल वृक्ष की आकृति प्रमुखता से प्राप्त हुई है और वर्तमान 21वी सदी के भारत में भी पीपल वृक्ष को अत्यधिक पवित्र माना जाता है। उसकी पूजा की जाती है। पीपल वृक्ष का भारत में आध्यात्मिक, धार्मिक, औषधीय व पर्यावरणीय महत्व अत्यधिक माना जाता है। पीपल का वैज्ञानिक नाम फिक्स रिलिजिओसा (थ्पबने त्मसपहपवेनें) है। यह एक विशालकाय वृक्ष होता है। भारत में पीपल वृक्ष को ''बोधिवृक्ष'' कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में जितना यह पूजनीय व सम्मानीय है, उतना ही जनसामान्य इससे डरता भी रहा है। पीपल के पेड़ पर भूत–प्रेत का निवास होता है, इसे काटना नहीं चाहिए, इसके नीचे बैठना नहीं चाहिए। जैसी अवधारणाये भी भारतीय समाज में पीपल वृक्ष के साथ जुड़ी हुई है।

पीपल वृक्ष का पर्यावरणीय दृष्टिकोण से महत्वः यह वैज्ञानिक रूप से सत्यापित है कि पीपल एकमात्र वृक्ष है, जो दिन–रात 24 घण्टे प्राणवायु ऑक्सीजन को पर्यावरण में छोड़ता है जबकि अन्य पेड़–पौधे केवल दिन के समय ही आक्सीजन बनाते है, रात्रि में नहीं। इस प्रकार बड़ी मात्रा में पीपल पर्यावरण प्रदूषण को सोख कर वातावरण को मानव के लिए शुद्ध बनाता है। पीपल वृक्ष विशालकाय व बहुत लम्बी उम्र वाले वृक्ष हैं, इसकी जड़े मिट्टी में गहराई तक और दूर–दूर फैली होती है, जो कि अन्य वृक्षों की तुलना में ज्यादा बड़े क्षेत्र विस्तारित होती है। अतः मिट्टी में कटान को पीपल अन्य पेड़ों से ज्यादा रोक पाते हैं। यह वृक्ष अनेक पक्षियों व जीवों की संरक्षण स्थली होता है जिससे व्यष्टि के साथ समृष्टि का भी सन्तुलन बनाने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पीपल की एक विशेषता है कि यह ऐसा पेड़ है, जो विषय परिस्थितियों

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

में भी उगता है, इसे लगाने और इसकी देखभाल के लिए अलग से प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं होती है। अतः पीपल का पेड़ हमें हर जगह उगा हुआ मिलता है, यथा– छत, दीवारों, नाली के किनारे। ऐसी जगहों पर कोई और पौधा उगते हुए सामान्यतः नहीं मिलता है। चूंकि यह विशाल वृक्ष होता है। भारत में प्राचीनकाल से ही पीपल के इस महत्व को समझ लिया गया था और शायद इन्हीं वजहो से इसके संरक्षण के लिए ही अनेक प्रकार की अवधारणा इसके जुड़ गयी अथवा जोड़ी गई जिनके कारण सामान्यतः पीपल वृक्ष को काटने से बचा जाता है।

आध्यात्मिक व धार्मिक महत्व : पीपल के आध्यात्मिक महत्व के विषय में विश्व के सभी देश व लोग जानते हैं। ''बौद्ध परम्परा में दीपांकर बुद्ध और गौतम बुद्ध दो बुद्ध हैं, जिन्हें पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ''[1] और ये दोनों बुद्ध बने। इसलिए पीपल वृक्ष को बौद्धिवृक्ष कहा जाता है और विश्व में पीपल को गौतम बुद्ध के बौद्धिवृक्ष के रूप में ही पहचाना जाता है। पीपल को ज्ञान का प्रतीक मानकर इसकी पूजा की जाती है। बौद्ध परम्परा में तो पीपल अति सम्मानीय व पूजनीय है ही इसके अतिरिक्त यह जैन व हिन्दू धर्म में भी विशेष धार्मिक महत्व का वृक्ष है। हिन्दू धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और शिव का निवास इसमें माना जाता है। इसकी जड़ों को ब्रह्मा, तने को विष्णु और पत्तियों को शिव का रूप कहा जाता है।

भारत में स्त्रियाँ वट सावित्री वृत रख कर पीपल की पूजा करती है। अधिकांश मंदिरों के अन्दर या बाहर पीपल का वृक्ष अवश्य ही मिलता है। इसके अतिरिक्त आवासीय स्थानों पर जहाँ भी पीपल का वृक्ष मिलता है, वहाँ अधिकांश जगह पर इसके नीचे भी लोग पूजा करते हैं, धूप–दीया जलाते हैं।

औषधीय महत्व : पीपल के पत्ते छाल, जड़, फल सभी को औषधी के रूप में आयुर्वेद सहित सिद्ध, यूनानी और होम्योपेथी चिकित्सा पद्धतियों में भी उपयोग किया जाता है। ''आयुर्वेद के शास्त्र निघण्टूशास्त्र में इसे अमर औषधी कहा गया है।''[2] यह वात, कफ, पित्त से उत्पन्न सभी प्रकार के रोगों में उपयोगी होता है। पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों में मधुमेह, जलन, स्त्री रोगों में, श्वसन रोगों में, तन्त्रिका विकारों, पांचन, त्वचा सम्बन्धित परेशानियों में इसका उपयोग आसव, गोली, चूर्ण के रूप में किया जाता है।

विदेशों में भारत की सांस्कृतिक पहचान के विस्तार में महत्व : भारतीय संस्कृति के विस्तार के सम्बन्ध में पीपल के वृक्ष का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वप्रथम सम्राट अशोक महान की पुत्री संघमित्रा, श्रीलंका में बौद्धिवृक्ष की एक शाखा लेकर गई और उसे रोपित किया था। वर्तमान में बौद्ध धर्म वहाँ का राज्य धर्म है। इसके अतिरिक्त चीन, जापान, थाईलैण्ड, कम्बोडिया इत्यादि देशों में भी बौद्ध भिक्कू पीपल वृक्ष को लेकर गऐ। आज भी बिहार के बौद्धगया में गौतम बुद्ध के बौद्धिवृक्ष के दर्शन करने के लिए लाखों की संख्या में विदेशों से लोग भारत आते हैं। पीपल ने भारतीय संस्कृति को विदेशों में पहचान दिलाने में महती भूमिका निभाई है। यही कारण है कि भारत की पहचान बुद्ध के देश के रूप में होती है। ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संध में अपने भाषण में कहा था कि भारत ने विश्व को बुद्ध दिए हैं युद्ध नहीं।''[3]

इस प्रकार पीपल वृक्ष ज्ञान के वृक्ष के साथ शान्ति के प्रतीक के रूप में भी प्रसिद्ध है और यही भारतीय संस्कृति की पहचान है।

उपभोक्तावादी मानसिकता और संस्कृतिः 21वी सदी के भारत में वैश्वीकरण के माध्यम से उपभोक्तावाद का बोलबाला है जिसके फलस्वरूप भारत जैसे देश में उपभोक्तावादी संस्कृति भी बड़ी तीव्रता से फैली है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें सभी नागरिक आर्थिक आधार पर एक समान स्थिति में नहीं होते हैं। जबकि वैश्वीकरण के फलस्वरूप औद्योगीकरा को खूब बढ़ावा मिला है, जिसके कारण लगातार उत्पाद

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

किया जाता रहता है। इन उत्पादों में विलासितापूर्ण जीवन की चीजों का ही निर्माण ज्यादा होता है और इन्हें बेचने के लिए विज्ञापनों, समाचार पत्रों, सिनेमा इत्यादि द्वारा लगातार कृत्रिम माँगों को पैदा करने के लिए कार्य किया जाता है। इसके साथ ही ज्यादा से ज्यादा उत्पादों का उपभोग किया जाये की प्रवृत्ति विकसित होती जाती है। अत्यधिक उपयोगी मानसिकता के साथ ही नेम ंदक जीतवू अर्थात् एक बार उपयोग करों और फेंक दो जैसी वस्तुएँ तथा व्यवहार भी भारतीय समाज में लगातार वृद्धि कर रहा है। उपभोक्तावादी मानसिकता उपभोक्तावादी संस्कृति का निर्माण करती है। जिसके फलस्वरूप व्यक्तिवादिता भी अपने शिखर पर होता है। जिससे समाज में आर्थिक व सामाजिक असमानता को भी बढ़ावा मिलता है।

उपभोक्तावादी मानसिकता और पीपल पर प्रभाव : पीपल वृक्ष के औषधीय, आध्यात्मिक, धार्मिक, पर्यावरणीय महत्व को भारत में सदियों पूर्व जान लिया गया था और इन्हीं वजहों से इसे पवित्र पेड़ कहा गया और इसे पूजनीय और सम्मानीय माना गया। लोग इसकी सुरक्षा करते थे, इसका पोषण करते थे। परन्तु वैश्वीकरण और उदारीकरण के फलस्वरूप भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रचलन हुआ है, जिससे सभी को उपभोक्तावादी मानसिकता से देखा जाता है, चाहे वो इंसान हो, पेड़—पौधों, प्रकृति या कोई वस्तु। उपभोक्तावादी मानसिकता से यह मनोविज्ञान व्यक्ति का बन जाता है कि जो भी है, उसे उपभोग करो। संरक्षण का भाव उपभोक्तावाद में उत्पन्न नहीं होता है, इस प्रकार संरक्षण की प्रवृत्ति का ह्रास होता है। जबकि भारतीय परिपेक्ष में परस्पर संरक्षण और आवश्यक उपभोग की प्रवृत्ति का संतुलन बनाये रखने की संस्तुति रही है।

पीपल वृक्ष वृक्षों में राजा माना गया है, जिसके लाभों को प्राप्त करने के लिए पीपल को भारत में सार्वजनिक स्थलों पर विशेषकर मंदिरों के अन्दर अथवा बाहर लगाया जाता था। पीपल को सम्मान दिया जाता था, उसे काटा नहीं जा सकता था, न ही उखाड़ा जाता था। भारत में पीपल वृक्ष के साथ सम्मान व डर दोनों ही जुड़े हुए हैं, इसका कारण केवल उसका संरक्षण करना है। परन्तु उपभोक्तावादी मानसिकता के कारण व्यक्ति केवल स्वयं के लिए जीता है, स्वयं का भला सोच पाता है। यही प्रवृत्ति भारत में पीपल वृक्ष के साथ अनजाने में जुड़ गयी है। आज भी पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है, उसे काटा या उखाड़ा नहीं जाता है। अब व्यक्ति स्वयं की भौतिक समृद्धि के लिए खूब मंदिर जाकर ईश्वर से अपनी इच्छापूर्ति और कामनाओं के लिए प्रार्थना करते हैं, वहाँ स्थित पीपल वृक्ष के पास दिये जलाते हैं। उसके तने पर सिन्दूर और रोली लगाते, उसे मौली अर्थात् कलावा बाँधते हैं।

लम्बे समय तक यही कार्य पीपल वृक्ष के साथ करने से विशाल वृक्ष की जड़ों और तने की आन्तरिक शिराओं को तेल व सिन्दूर बन्द कर देते हैं अथवा काफी हद तक बन्द कर देता है, जिससे धीरे—धीरे पीपल अन्दर से खोखला हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम शोध लेखक द्वारा देखा गया, जिसके परिणामस्वरूप ही यह शोध लेख लिखने हेतु प्रेरणा मिली और इस तथ्य की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक समझा। अन्दर से उसके खोखला होने के परिणामस्वरूप पीपल वृक्ष एकाएक पूरा ही जड़ से उखड़ कर गिर गया। इस घटना के बाद अनेक पेड़ देखे जिनके तने की हालत ऐसी ही मिली। तना, दीया व तेल की वजह से जल जाता है और काला पड़ा हुआ है, उसी पर रोली या सिन्दूर लगाया जा रहा है। लोग लगातार पीपल की पूजा कर रहे हैं परन्तु यह पूजा उस पीपल वृक्ष्ज्ञ को काल के गाल में ले जा रही है, जो वृक्ष पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग कम करने में सबसे बड़ा सहयोगी सिद्ध हो रहा है। जैव विविधता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

धूप–दीया न किया जाने वाला पेड़

धूप–दीया किया जाने वाले पेड़

इस शोध लेख में धूप–दीया किए जा रहे पीपल वृक्ष और धूप–दीया न किए जा रहे पीपल वृक्ष के चित्रों को दिखाया गया है। इन चित्रों से तुलनात्मक स्वास्थ्य स्थिति पीपल की स्वतः ही ज्ञात हो जाती है। पूजा करना एक सदकर्म है परन्तु उसके लिए भी कुछ नियम होते हैं। यदि पीपल को मान–सम्मान देना है, उसके नीचे बैठकर अपने स्वास्थ्य को सही करना है तो उसे तेल से दूर रखे, उसके तने से दीया दूर रख ऐसी व्यवस्था कर आसानी से पीपल वृक्ष को संरक्षित किया जा सकता है। पीपल तब स्वयं ही बिना प्रार्थना किए, बिना मांगे मानव को जीवनदायी ऑक्सीजन व अन्य लाभ लगातार दे सकेगा। मनुष्य को उपभोक्तावादी मानसिकता से उबर कर परस्पर संवर्धन व संरक्षण की प्रवृत्ति जो भारतीय संस्कृति है, को ही अपनाकर वर्तमान समय में आ रही विभिन्न प्राकृतिक समस्याओं को कम करने में सहयोग दे सकेगा।

आँख बन्द कर किया गया कोई भी कार्य लम्बे समय में हानि करता है। उपभोक्तावादी मानसिकता प्रत्येक कार्य को केवल अपने स्वार्थ पूर्ति या लाभों को प्राप्त करने के लिए करती है। बिना तर्क और दूसरे पक्ष को क्या हानि हो रही है, इसके प्रति कोई विचार नहीं करती। भारत की संस्कृति कभी भी केवल उपभोक्ता के रूप में मानव को नहीं व्यक्त करती न ही व्यवहार करती है। भारत की संस्कृति की विशेषता परस्पर सहअस्तित्व के विचार को व्यवहार करना है, जिसको हम प्रकृति के साथ मानव के सम्बन्ध में समझ सकते हैं, जो आज भी भारतीय मनुष्य के जीवनचर्या का अंग है परन्तु उपभोक्तावादी मानसिकता के प्रचलन

से केवल अपने विषय में ही मनुष्य आज सोच रहा है, उसकी इच्छापूर्ति होती रहे ऐसे कार्य कर रहा है परन्तु कौन से कार्य को करने से प्रकृति या पेड़–पौधों को हानि हो रही है, इस ओर शायद ही विचार कर रहा हो।

पीपल एक पवित्र, सम्मानीय वृक्ष है, जो अपनी विशालता व विशेषगुण के कारण मानव व समृष्टि को संवर्द्धित करता है। प्राकृतिक संतुलन बनाने में मदद करता है। बड़ी मात्रा में इसे लगाने व संरक्षण की आवश्यकता है। इसका उचित संरक्षण किया जाये, ऐसे क्रियाकलापों को सावधानीपूर्वक किया जाये, जो इसे हानि पहुँचाये। पूजा जैसी पवित्र क्रिया को सही प्रकार से करें, पीपल को हानि पहुँचाये बिना क्योंकि मंदिरों व कॉलोनी के अन्दर मौजूद पीपल वृक्ष की ही व्यक्ति पूजा करते है और यहीं पर ही इस वृक्ष का होना आवश्यक होता है और यहीं पर ही पीपल को सबसे ज्यादा हानि पहुँचती है। जंगल में या मानव बस्ती से दूर उगे पौधों को कोई हानि मानवीय क्रियाकलापों से प्रत्यक्षतः नहीं पहुँचती है।

अतः पीपल वृक्ष का मान–सम्मान और पर्यावरण को हानि न पहुँचे और मनुष्य के धार्मिक कार्य भी पूर्णतः सम्पन्न हो सके, ऐसी सन्तुलित व्यवस्था जो कि भारत की ही व्यवस्था है, को पुनः अपनाना होगा और उपभोकतावाद की बढ़ती प्रवृत्ति को सन्तुलित करना होगा।

संदर्भ सूची

1. सिंधु सभ्यता में पीपल की छाप क्यों और कैसे, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह, ॒ण्लवनजनइमण्बवउ
2. पीपल भारत, ज्ञान का हिन्दी महासागर, ीजजचेरूध्ध्ळींतंजकपेबवअमतलण्वतह दिनांक 20.06.2025
3. वही
4- भारत ने दुनिया को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं : प्रधानमंत्री मोदी ऑस्ट्रिेलिया में, द हिन्दू
https://www.thehindu.com